CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 24th Nov. 2020, Revised on 29th Nov. 2020, Accepted 18th Dec. 2020

आलेख

महिलाओं के सशक्तिकरण में डिजिटल शिक्षा की भूमिका

* **बृजलता कुमारी**, *शोधार्थी*
ज्योति महिला विद्यापीठ विश्वविद्यालय जयपुर
Email- pavarbhim@gmail.com, Mob.- 7728813981

मुख्य शब्द *: शैक्षिक, आर्थिक व सामाजिक स्थितियां, ब्लैक बोर्ड आदि.*

प्रस्तावना

युगों – युगों से भारतीय समाज में पुरुष प्रधानता दृष्टिगत होती रही है । यहाँ नारियों की शैक्षिक, आर्थिक व सामाजिक स्थितियां निम्न रही हैं। प्राचीन ग्रंथों में चाहे महिलाओं को दुर्गा, लक्ष्मी ,सरस्वती देवियों के स्वरूप माना गया हो तथा संविधान में भी बेटियों को बेटों के समान उत्तराधिकार दिए गए हैं। परंतु वास्तविकता में उपरोक्त कथन कल्पनातीत होते नजर आ रहे हैं। विभिन्न उदाहरण आए दिन देखने को मिलते हैं जहां पैदा होते ही बेटियों को अभिशाप माना जाता है ।बेटे के जन्म पर थाली बजाकर मिठाई बांटी जाती है वहीं दूसरी तरफ बेटी के जन्म पर मातम सा छा जाता है। स्त्री के बुद्धि विवेक को आज भी संदेह की दृष्टि से आकलन किया जाता है। वैदिक काल में जो स्थान महिलाओं को प्राप्त था वह धीरे–धीरे दयनीय स्थिति में पहुंच गया मध्यकाल में अति हो गई जिसका असर वर्तमान में प्रत्यक्ष दृष्टिगत हो रहा है ,इतना सब होने के बावजूद इस बात का भान तो हम सभी को है कि किसी गाड़ी को उसके लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए दोनों पहियों का होना अति आवश्यक है तभी वह संतुलित रूप से आगे बढ़ पाएगी इस बीच एक भी पहिया धुरी से अलग हो जाए तो व्यवधान उत्पन्न हो जाता है ।फिर महिलाओं के साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार क्यों किया जाता है। एक उन्नत समाज की महिलाओं को भी पुरुषों के समान अवसर प्रदान कर उनकी बौद्धिक ,धार्मिक ,मानसिक ,राजनैतिक और सामाजिक प्रतिभाओं का लाभ उठाना चाहिए। इसके लिए महिला शिक्षा में सशक्तिकरण के लिए पूरी दुनिया में अनेक प्रयास व योजनाएं चलाई जा रही हैं। वह दिन गुजर गए जब कक्षा में प्रशिक्षण पाठ्य पुस्तकों पर ही निर्भर रहता था शिक्षक अपने विचारों को व्यापक रूप से समझाने के लिए ब्लैक बोर्ड तथा अन्य सामग्रियों का सहयोग लेकर पारंपरिक प्रणाली से विषय –वस्तु को स्पष्ट करने का प्रयास करता था परंतु आज स्थितियां भिन्न है इंटरनेट मोबाइल फोन एप्लीकेशन लैपटॉप और अन्य आधुनिक उपकरणों के विकास के कारण आज दुनिया की अधिक से अधिक कार्य प्रणालियां डिजिटल हो रही है ।आजकल डिजिटल शिक्षण पीपीटी ,वीडियो,ई–लर्निंग अभ्यास संबंधी ऑनलाइन प्रशिक्षण और अन्य डिजिटल शिक्षण पद्धतियों से महिला शिक्षा में निम्न आवश्यकताओं पर बल दिया जा रहा है संवाद व आत्मकुशलता को गुणवत्तापूर्ण बनाना ,आवश्यक विवरण ,शब्दावली की जानकारी स्वयं की योग्यता अनुसार प्राप्त करना ,बाह्य मार्गदर्शन प्राप्त कर बिना समयबद्धता के कम खर्च में सुरक्षात्मक आवश्यक सूचना प्रदान करना। महिला सशक्तिकरण को पूर्ण सफल बनाने के लिए प्रत्येक परिवार में बेटी के बचपन से ही बढ़ावा देने की आवश्यकता है। क्योंकि बेहतर शिक्षा की शुरुआत सर्वप्रथम घर से होती है किसी भी बच्चे की परवरिश सबसे अधिक मां पर निर्भर

करती है। यदि मां व परिवार की महिलाएं शिक्षित व सशक्त होंगी तभी वह अपने परिवार की देखभाल की जिम्मेदारियों को पूर्ण करने में शारीरिक व मानसिक रूप से सफल हो पाएंगी। जिससे समाज का भविष्य सुनहरा होगा और राष्ट्र विकास की ओर अग्रसर होगा ।महिलाओं को अपने अस्तित्व को पहचानना सबसे जरूरी है ।शिक्षा प्राप्ति का पूर्ण लाभ उठाना चाहिए और डिजिटल शिक्षा के लिए अपने साथ–साथ अन्य महिलाओं को भी जागरुक कर डिजिटल शिक्षा की उपयोगिता को समझा कर उनके अधिकारों के प्रति उन्हें आगे बढ़ा कर उनका मनोबल बढ़ाना चाहिए ताकि वह बाहर जाकर अपने कार्य भार को निभाने में समर्थ हो, उनमें अपने अधिकारों को समझने तथा प्राप्त करने की लालसा उत्पन्न हो एवं समस्याओं का सामना करने की ताकत का संचार हो वह भी पुरुषों के समान परिवार के दायित्व को पूर्ण कर सकें ।

यदि कोई उनका शोषण करने की कोशिश करें तो मैं उसे सबक सिखाने के लिए आगे बढ़े ।समाज को आगे बढ़ाने में महिला जब शिक्षित होगी तो पूर्ण सहयोग कर पाएगी और डिजिटल शिक्षा से आत्मविश्वास खुद ब खुद आ जाएगा जिससे वह प्रत्येक क्षेत्र में अपने कार्यों को और भी कुशलता से कर पाएगी । डिजिटल शिक्षा महिलाओं को शिक्षा के मितव्ययी माध्यम उपलब्ध करवाकर जागरूकता प्रदान कर रही हैं।जिससे जागरूक होकर महिला आगे बढेगी और महिला आगे बढ़ेगी तो देश आगे बढ़ेगा तथा जिस देश की शिक्षा की नींव मजबूत व गहरी होती है उस देश के सफलता स्वतः कदम चूमती है।वर्तमान समय में डिजिटल शिक्षा इसका सशक्त साधन सिद्ध हो रही है डिजिटल शिक्षा न केवल शहरी अपितु ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के लिए भी उपयोगी है डिजिटल शिक्षा से महिलाओं के स्वावलंबन के साथ–साथ अंतरक्रियाशीलता ,समय की बचत व सदुपयोग , पर्याप्त अध्ययन सामग्री आत्मनिर्भरता के लिए मजबूत व प्रभावी प्लेटफार्म प्रदान कर महिलाओं को उनकी वास्तविक पहचान व उनकी योग्यता अनुसार ऑनलाइन प्रौद्योगिकी व नई शैक्षिक प्रणाली का लाभ उठाने का हक प्रदान कर रहीं हैं।इस प्रकार डिजिटल शिक्षा से महिलाओं की जिंदगी में अहम बदलाव लाने के साथ–साथ निम्न लाभ भी प्रदान कर रही है जैसे –मोटर स्किल्स ,निर्णय क्षमता ,विजुअल लर्निंग सांस्कृतिक जागरूकता ,गुणवत्ता और नई चीजों की खोज यह सभी कम खर्च में सर्वउपलब्ध हो रहे हैं। एक तरफ डिजिटल शिक्षा महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है वहीं दूसरी तरफ इसके कुछ दुष्परिणाम है कई बार यह गलत सूचना का संचार कर भ्रम की स्थिति उत्पन्न कर देती है ।यह बहुत ही महंगी शिक्षण प्रणाली है जो सभी के लिए उपलब्ध होना कठिनाई पूर्ण कार्य है। व्यवहारिक शिक्षा का अभाव पाया जाता है ।उत्साह की कमी तो रहती ही है शिष्टाचार तो बिल्कुल नहीं होता आत्म मूल्यांकन नहीं हो पाता ।कई बार धन व समय की बर्बादी सिद्ध होती है । अनुशासन की कमी तो बहुत अधिक रहती है कई बार महिलाएं गलत राह व तरीका अपनाकर अपना संपूर्ण जीवन बर्बाद कर लेती है। पैसे का खर्च करने के बाद भी ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त सुविधा न मिलने से महिलाएं इसके लाभ से वंचित रह जाती हैं। आत्मविश्वास की कमी व हिंसा का शिकार हो जाती हैं इस प्रकार डिजिटल शिक्षा जहां सशक्तिकरण में सहयोगी है कई बार इसके नुकसान भी उठाने पड़ते हैं परंतु फिर भी डिजिटल शिक्षा महिला सशक्तिकरण में किसी वरदान से कम नहीं है। महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं व कानून बनाए गए हैं जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार से हैं ।

- अनैतिक व्यापार रोकथाम अधिनियम (1956)
- दहेज प्रथा उन्मूलन 1961
- समान कार्य के लिए समान वेतन 1976
- बाल विवाह अधिनियम 1994
- घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम 2005
- गरिमा बालिका संरक्षण एवं सम्मान योजना 2016
- महिला शक्ति पुरस्कार समीति

- जिला महिला समीति
- मातृत्व सुविधा जननी सुरक्षा योजना
- तीन तलाक रोकने हेतु अधिनियम जो अभी वर्तमान में पारित हुआ है।

उपरोक्त अधिकार व नियम तो बना दिए परंतु इनके प्रभावी रूप से पारित करने के लिए महिलाओ का शिक्षित व जागरूक होना अति आवश्यक है। महिला शिक्षा के लिए यह वाक्य है कि 'एक नारी पढेगी सात पीढ़ी तरेगी' यह बात सही भी है क्योंकि पुरुष केवल अपने कुल का नाम रोशन करता है जबकि महिला एक साथ दो– दो कुलों को रोशनी देने का कार्य करती है । जिम्मेदारियों के निर्वहन में कहीं बेटी तो कहीं बहू तो कहीं मां के दायित्व को पूर्ण करने में समर्पण करती है। इसलिए एक स्वस्थ व समर्थ समाज के विकास के लिए महिलाओं के प्रति दोगले व्यवहार का परित्याग कर स्वच्छ विचारों का प्रवाह समाज में होना चाहिए। महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्रदान कर उनकी महत्ता को बढाने में प्रमुख कारक शिक्षा है, जिसमें नवीन शिक्षण–

प्रणाली डिजिटल शिक्षा को अपनाया जाना चाहिए। डिजिटल शिक्षा अनिवार्य रूप से कौशल एवं ज्ञान का कंप्यूटरीकृत समर्थित साधन है जो ऑनलाइन शिक्षा के अनुप्रयोगों को क्रियात्मक रूप देकर प्रभावी शिक्षण प्रदान करती है यह शिक्षा के नवीन अवसरों के साथ –साथ स्कूल तथा महाविद्यालय में नामांकन और ठहराव में वृद्धि को सुनिश्चित करने का कार्य करती है । वर्तमान समय में डिजिटल शिक्षा महिलाओं को घर में रहते हुए शिक्षा प्राप्त करने का बहुत ही महत्वपूर्ण माध्यम है। जिससे महिलाएं घर से लेकर कार्यालय तक व्यवधान रहित अपने दुर्गा स्वरूप (अष्टभुजा)रूप का भान कराने में सफलता प्राप्त कर विभिन्न भूमिकाओं के दायित्व को पूरा कर रही हैं । तत्कालीन परिस्थितियों में महिलाशिक्षा प्राप्ति बहुत ही दुष्कर कार्य है,परंतु डिजिटल शिक्षा के सहयोग से महिलाओं को संबल प्रदान कर महिलाओं को मजबूत व आत्मनिर्भर बनाने का कार्य किया जा रहा है।जिससे दायित्व भार व अस्तित्व हीनता को नकार कर अपनी खोई हुई अस्मिता को पुनः प्राप्त कर दूसरों के हाथों की कठपुतली न रहकर समाज का अहम हिस्सा बनकर उभर रही हैं । डिजिटल शिक्षा की महिला सशक्तिकरण में भूमिका को निम्न बिंदुओं से दर्शाया जा सकता है–

- डिजिटल शिक्षा ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ मार्गदर्शन भी करती हैं।
- महिलाओं में आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहयोग करती है।
- क्रियात्मक व उपयोगी शिक्षा उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- आर्थिक कठिनाइयों से बचाकर रोजगार के पर्याप्त अवसर प्रदान करती है।
- शिक्षा के व्यापक अवसर उपलब्ध कराती है।
- आवागमन व आवास की सुविधा प्रदान कर समस्याओं का निस्तारण करती है।
- गरीबी और हीनता से छुटकारा दिलाती है।
- विशेष परिस्थितियों में शिक्षा की प्रभावी तथा निर्बाध सेवाएं उपलब्ध कराती है । जैसे –(कोरोना काल में) ।
- पूर्वाग्रह से छुटकारा दिलाकर दृढ़ता प्रदान करती है।
- दहेज प्रथा कन्या भ्रूण हत्या जैसी बुराइयों से बचाने तथा समाज को उबारने की सार्मथ्य उत्पन्न करती है।
- महिलाओं के शैक्षिक,बौद्धिक,सांस्कृतिक पक्षों को सुधारने में सहायक।
- महिलाओं के विकास के लिए एक साथ कई विकल्प प्रदान करती है।

- दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाने के अवसर प्रदान कर विचारात्मक और सृजनात्मक योग्यताओं का व्यापक प्रसार करती है।
- आने वाली पीढ़ी के लिए मौलिकता व आत्मनिर्भरता का मंच उपलब्ध कराती है।
- नेतृत्व क्षमता और कुशलता प्रदान करती है।
- महिलाओं को प्रतिभा प्रदर्शन के लिए सशक्त माध्यम उपलब्ध कराती है।
- पुरुषों के समान अवसर देती है तथा निर्णय करने की क्षमता विकसित करती।
- प्रभावी अभ्यास तथा निरंतरता बनाये रखती है।

निष्कर्ष

महिलाओं की यह विडंबना रही है कि स्वतंत्रता के इतने दिनों के बाद भी उसे कभी धर्म के नाम पर कभी परंपरा, कभी रीति–रिवाजों के नाम पर अपनों के बीच ही प्रताड़ित किया जाता रहा है। इससे महसूस होता है कि मानो महिला जीवन ही दूसरों के हाथों की कठपुतली बनकर जीने के लिए हुआ है बचपन में पिता की छाया में जवानी में पति के आश्रय में और बुढ़ापे में संतान पर बोझ स्वरूप निर्भर रहती है । इस दोगले व्यवहार से निजात दिलाने के लिए सशक्तिकरण आवश्यक है। 'पंडित जवाहरलाल नेहरु जी का कथन है **"लोगों को जगाने के लिए महिलाओं का जागृत होना जरूरी है"** एक बार जब वह कदम उठा लेती है तो परिवार आगे बढ़ता है और परिवार आगे बढ़ता है तो पूरा देश आगे बढ़ता है ।' महिलाओं को भी इस क्षेत्र में शिक्षित और समर्थ होने का संकल्प लेकर आगे बढ़ना चाहिए सशक्तिकरण की प्रक्रिया में समाज को पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण से बाहर आना चाहिए। महिलाओं के निर्णय का उचित सम्मान करना तथा उनके विकास के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराने में सहयोग करना चाहिए। सामूहिक निर्णयों में महिलाओं को अपनी बात प्रभावी तथा खुलकर रखनी चाहिए ।भारत सरकार द्वारा अनेक सरकारी योजनाएं एवं गैर सरकारी कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है जिसमें डिजिटल शिक्षा उपचारात्मक प्रक्रिया सिद्ध हो रही है ,जिसका महिलाओं को पूर्ण उपयोग कर अपने आपको आत्मनिर्भर बनाकर स्वयं को समाज का अहम हिस्सा साबित कर उन्नत समाज के निर्माण में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग देना चाहिए और यह साबित करना चाहिए कि आज की नारी अबला नहीं सबला है।

**** Corresponding Author***
बृजलता कुमारी, *शोधार्थी*
ज्योति महिला विद्यापीठ विश्वविद्यालय जयपुर
Email-pavarbhim@gmail.com, Mob.- 7728813981